Dr. Madan Paswan, History.
Class : B.A. Part-II (Hons.) 3rd Paper
Topic :- Unit-I (d) इल्तुतमिश

Lecture No. (51)
Date – 11.05.2020
From Page no. 1 to 2

तुर्क अमीरों और सैनिक अधिकारियों ने सबसे योग्य और बहादुर तुर्क इल्तुतमिश को अपना सुल्तान चुना। इल्तुतमिश तुर्किस्तान की इल्बरी जनजाति का तुर्क था। अनेक इतिहासकार उसे ही दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक मानते हैं। उसका पिता इलम खाँ एक कबायली सरदार था। उसके भाई ने बचपन में ही उसे दास बना कर बेच दिया था। अंतिम रूप से इल्तुतमिश को ऐबक ने खरीद लिया था। वह एक योग्य सैनानायक तथा सक्षम व्यक्ति था, इसलिए उसे जल्दी पदोन्नति मिली।

1200 ई० में गोरी द्वारा ग्वालियर विजय के बाद इल्तुतमिश को उस नगर का अमीर बनाया गया। 1205-6 ई० में गोरी ने अपने अंतिम अभियान के समय इल्तुतमिश के अद्वितीय साहस से प्रसन्न होकर ऐबक को उसे दासता से मुक्त करने का आदेश दिया। ऐबक ने इल्तुतमिश को अपनी दासता से मुक्त किया, साथ ही अपनी एक पुत्री का विवाह उससे कर दिया और उसे बदायूँ का शासक नियुक्त कर दिया।

शासक बनने पर इल्तुतमिश को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। सर्वप्रथम सामंतों का एक प्रभावशाली वर्ग इल्तुतमिश की सत्ता मानने के लिए तैयार नहीं था। उनमें कुत्बी और मुइज्जी सामंत प्रमुख थे। ये कुलीन सामंत थे जो इल्तुतमिश को एक दास होने के नाते सुल्तान के लिए अयोग्य मानते थे। इन कठिनाईयों में तीन शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वियों :—

(क) गजनी में यल्दूज,
(ख) सिन्ध में कुबाचा तथा
(ग) लखनौती में अली मरदान।

से संबंध निर्धारित करने की समस्या थी। राज्य के दक्षिण-पश्चिम में राजपूत राजपूत तुर्कों का प्रतिरोध प्रबल रूप से कर रहे थे। अपने शासन काल में इल्तुतमिश को मंगोल आक्रमण के संकट से भी जूझना पड़ा। इल्तुतमिश को मंगोल आक्रमण के संकट से भी जूझना पड़ा। इल्तुतमिश के 26 वर्ष के शासन काल को तीन भागों में बाँटा जा सकता है :—

(1) 1210-20 ई० तक उसने अपने विरोधियों का दमन किया,
(2) 1221-27 ई० तक जिसमें उसे मंगोल आक्रमण के खतरे का सामना करना पड़ा और
(3) 1228-36 ई० तक जब वह अपने वैयक्तिक और वंशीय सत्ता के संगठन के लिए कार्य करता रहा।

इल्तुतमिश का सैनिक अभियान :—

(1) 1221 ई० में कालिंजर के विरुद्ध पहला सफल अभियान.
(2) 1226 ई० में रणथम्भौर विजय.
(3) 1227 ई० में मंडोर दुर्ग पर विजय। उसके बाद

(Conti...)

Ajanta Officer

अजमेर, थंगनीर और नागौर की विजय।

(4) 1231 ई० में ग्वालियर (मंगल देव) पर अधिकार।

(5.) 1233-34 ई० में अंतिम अभियान कालिंजर के विरुद्ध।

(6) 18 फरवरी, 1229 ई० को बगदाद के अब्बासी खलीफा अलमुस्तनिर बिल्लाह के राजदूत ने इल्तुतमिश को अभिषेक पत्र प्रदान किया।

(7.) उसके शासन काल में इक्तादारी प्रथा का विकास हुआ।

(8.) उसने चाँदी के टंके तथा तांबा के जीतल सिक्के चलाये।

(9.) उसके शासन काल में इतिहासकार मिनहाज को संरक्षण मिला।

(10.) कुतुबमीनार, राजकुमार महमूद और इल्तुतमिश के मकबरे और शम्सी मदरसा के निर्माण का श्रेय इल्तुतमिश को है।

सल्तनत कालीन स्थापत्य कला :-

(क) अढ़ाई दिन का झोपड़ा :

यह इमारत सम्राट विग्रहराज द्वारा निर्मित संस्कृत मंदिर को तोड़कर अजमेर में बनवाया गया था। यह मूलतः एक मस्जिद है। इसका विस्तार इल्तुतमिश के समय हुआ।

(ख) नासिरुद्दीन महमूद का मकबरा या सुल्तानगढ़ी :

इल्तुतमिश द्वारा निर्मित भारत में प्रथम मकबरा का निर्माण मलकापुर में (1231 ई०) करवाया गया। इसके गुम्बद-नुमा छत के प्रयोग में नये तकनीक का इस्तेमाल किया गया है। इल्तुतमिश को मकबरा निर्माण शैली का जन्मदाता कहा जाता है। मकबरे के आंगन में भूरे पत्थरों एवं संगमरमर का प्रयोग हुआ है। यह हिन्दू-इस्लामी शैली का सम्मिश्रण है।

Continue........

— Dr. Madan Paswan, Lecture No. 51 (History)